ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-4* May- 2021
Innovation The Research Concept

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में आर्थिक क्रांति : एक विवेचन

Economic Revolution In The Poetry of Ramdhari Singh Dinkar: A Discussion

Paper Submission: 06/05/2021, Date of Acceptance: 22/05/2021, Date of Publication: 24/05/2021

मान प्रकाश मीणा
सह आचार्य,
हिन्दी विभाग,
सेठ आर.एल. सहरिया
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कालाडेरा
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

रामधारी सिंह दिनकर एक क्रांतिकारी कवि है। उन्हें समाज, धर्म, राजनीति, अर्थतंत्र जहाँ भी विषमता दिखाई देती है, वे उसके विरुद्ध क्रांति का बिगुल बजा देते हैं। हमारे आलोच्य रिसर्च पत्र का विषय आर्थिक क्षेत्र है, उसी पर हम ध्यान केन्द्रित करेंगे। दिनकर क्रांतिकारी होने के कारण आर्थिक क्रांति का स्वागत करते हैं। उन्हें धन के बल पर मानव द्वारा मानव का शोषण स्वीकार नहीं है। उनकी दलित और शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति है। यह उनके काव्य में दयनीय और आक्रोशमय चित्रण द्वारा प्रगट होती है। वे पूँजीपतियों, जमींदारों और मिल मालिकों के प्रति क्रोध रखते हैं। इसके साथ ही वे क्रांति का आह्वान करके वर्गविहीन समतामूलक आदर्श समाज के निर्माण की बात करते हैं।

Ramdhari Singh Dinkar is a revolutionary poet. Wherever they see inequality in society, religion, politics, economy, they play the bugle of revolution against it. The subject of our research paper is the economic sector, we will focus on it only. Dinkar, being a revolutionary, welcomes the economic revolution. They do not accept the exploitation of human beings on the basis of money. He has sympathy for the downtrodden and the underprivileged. This is reflected in his poetic and pathetic portrayal. They are angry with capitalists, landlords and mill owners. Along with this, he calls for revolution and talks of building a classless egalitarian ideal society.

मुख्य शब्द : दिनकर एक क्रांतिकारी कवि, उनके काव्य में क्रांति के विविध रूपए आर्थिक क्रांति, मजदूरों व श्रमिकों की दयनीय दशा के प्रति सहानुभूति, पूंजीपतियों और सामंतों के प्रति क्रोध, ईश्वर और भाग्यवाद का विरोध, पूंजीवाद का विरोध और साम्यवाद का समर्थन, आर्थिक विषमता की समाप्ति और वर्ग हीन और शोषणमुक्त समाज की परिकल्पना।

Dinkar is a revolutionary poet, in his poetry various forms of revolution, economic revolution, sympathy for the pathetic condition of laborers and workers, anger against capitalists and feudal lords, opposition to God and fatalism, opposition to capitalism and support of communism, ending economic disparity And the concept of a classless and exploitative society.

प्रस्तावना

दिनकर समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता के विरोधी है। उनके अनुसार समाज में जमींदार किसानों का शोषण कर रहे हैं, मिल मालिक मजदूरों का शोषण कर रहे हैं और पूँजीपति द्वारा समर्थित सरकार जनता का शोषण कर रही हैं। उन्हें ये आर्थिक असमानता कदापि स्वीकार नहीं है। दिनकर किसानों के शोषण के विरुद्ध उनकी आवाज उठाते हैं। किसानों के शिशु दूध के लिए तड़पते हैं। वे बच्चों के लिए दूध की खोज में स्वर्ग के देवताओं से आक्रमण करने के लिए तैयार हो जाते हैं –

''हटो व्योम के मेघ–पंथ से स्वर्ग लूटने हम आते हैं,
दूध–दूध ओ वत्स। तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं।''[1]

दिनकर किसानों की दयनीय दशा के लिए आंसू बहाते हैं। वे किसानों की दयनीय दशा पर लेखनी चलाते हैं कि किसानों के पास खाने के लिए गम और पीने के आँसू ही है। किसान तो समझदार है वह गम खाकर चुप रह सकता है, पर उन अबोध शिशुओं की दशा और भी दयनीय है जो आँसू पीने के आदी नहीं है जो दूध के लिए चिल्लाते रहते हैं–

''पर शिशु का क्या हाल सीख पाया न अभी जो आँसू पीना।''2

दिनकर मजदूरों की दयनीय दशा के प्रति न केवल द्रवित होते हैं अपितु क्रांति का आह्वान करते हैं। मजदूर दिन–रात मेहनत करते हैं परन्तु उन्हें मेहनत का उचित फल नहीं मिलता। मिल–मालिकों द्वारा उनका भयंकर शोषण किया जाता है। दरिद्र जनता का धनिकों द्वारा संसार में सर्वत्र शोषण हो रहा है –

''चढ़ती किसी की बूट पर पालिश किसी के खून की।''3

उन्हें गरीबों का शोषण बिल्कुल बर्दाश्त नहीं है। वे सम्पूर्ण शोषक वर्ग के विरुद्ध क्रांति करना चाहते हैं। कवि पूँजीपतियों से इतनेरूष्ट है कि वह प्रलय के देवता रूद्र से उनके वैभव के विनाश के लिए क्रांति का बिगुल बजाते हैं –

''गिरे, विभव का दर्प चूर्ण हो, लगे आग आडम्बर में,
वैभव के उच्चाभिमान में, अहंकार के उच्च शिखर में,
स्वामिन! अन्धड़ आग बुला दो।''4

रामधारी सिंह दिनकर गरीबों के शोषण करने वाले पूँजीपतियों का विरोध करते हैं। दिनकर पूँजीपतियों के प्रति अत्यंत क्रोधाकुल है। वे उनको 'दानव पिशाच' आदि शब्दों से अभिहित करते हैं। दिनकर कहते हैं कि एक ओर पूँजीपति विलासिता के नशे में डूबे हुए है जबकि दूसरी ओर गरीबों की मृत्यु–शैय्या पर कोई रोने वाला नहीं है – एक दृष्टान्त आर्थिक विषमता का –

वे भी यही दूध से जो अपने श्वानों को नहलाते हैं,
ये बच्चे भी यहीं क्रब में दूध–दूध जो चिल्लाते हैं।''[5]

दिनकर को यह लगता है कि संसार में सभी जगह अन्याय हो रहा है। अमीर और भोगी व्यक्ति हमेशा सुख भोगता है और गरीब हमेशा दुख भोगता रहता है। प्रकृति का भी यही नियम है कि जहाँ हरियाली ज्यादा रहती है, वहीं वर्षा अधिक होती है और मरुभूमि सदैव प्यासी रहती है। दिनकर इस आर्थिक असमानता को दूर करने समानता स्थापित करना चाहता है। वह वर्ग–संघर्ष का दूर कर आर्थिक विषमता दूर करना चाहता है। कवि मार्क्सवाद से अत्यधिक प्रभावित दिखाई पड़ता है। कवि 'कृरुक्षेत्र' महाकाव्य में मार्क्सवाद की काव्यात्मक अभिव्यक्ति की है। कवि ने प्रारंभिक साम्यवाद (Primitive Communism) का वर्णन इस प्रकार किया है –

''बिना विघ्न जल अनिल सुलभ है आज सभी को जैसे,
कहते हैं थी सुलभ भूमि भी कभी सभी को वैसे,
नर–नारी का प्रेमी था मानव मानव का विश्वासी,
बंधे धर्म के बन्धन में सब लोग जिया करते थे,
एक दूसरे का दुःख हँसकर बाँट लिया करते थे।''[6]

लेकिन कालान्तर में जब मानव ने गरीबी देखी तो उसके मन में लोभ उत्पन्न हो गया। उसके मन में धन संचय करने का भाव जागृत हुआ। वह दूसरों से आँखे बचाकर स्वार्थी बनकर धन जोड़ने लगा। फिर सभी ने ऐसा किया। फलतः वैयक्तिक भोगवाद की प्रथा प्रारंभ हुई जिसके कारण आज संसार में इतनी विषमता है –

''इस वैयक्तिक भोगवाद से, फूटी विषय की धारा,
तड़प रहा जिसमें पड़कर मानव–समाज यह सारा।''[7]

धीरे–धीरे इससे समाज अन्याय, अत्याचार, चोरी बढ़ने लगी। क्रमशः लूटमार, शोषण आदि का भी प्रचलन होने लगा।

रामधारी सिंह दिनकर मानते हैं कि संसार के कुटिल मानव ने अपने उल्टे–सीधे कार्यों के समर्थन के लिए 'ईश्वर और भाग्यवाद' का सहारा लिया। वह ईश्वर और भाग्यवाद के नाम से दूसरों से छल और शोषण करने लगा। मानव परिश्रम करके धन कमाता है और पूँजीपति उसे भाग्यवाद के नाम से छीन लेते हैं –

''एक मनुज संचित करता है, अर्थ पाप के बल से,
और भोगता उसे भाग्यवाद के छल से।''[8]

पूँजीपतियों ने भगवान को भी अपने कब्जे में ले रखा है। पूँजीपति अन्याय द्वारा अपनी संचित सम्पत्ति को 'भगवान की कृपा' फल बताकर जनता को धोखा देते हैं। गरीबों के पास न तो पूजा करने के लिए समय है और न ही नैवेद्य में चढ़ाने के लिए अश्रु–जल के सिवाय और कोई दूसरी वस्तु।

दिनकर का मानना है कि पूँजीपतियों द्वारा सर्वहारा वर्ग का शोषण चिरस्थायी नहीं होता है। कार्लमार्क्स का मानना है कि पूँजीवाद अपने विनाश के बीज स्वयं बोता है (ब्पचपजंसपेउ इतममके पजे वूद`ममके व`कमेजतनबजपवद) कवि का मानना है कि पूँजीवाद का तीव्रगति से विनाश होगा और साम्यवाद की अतिशीघ्र स्थापना होगी –

''आज कम्पित क्यों मूल संसार का, अर्थ का दानव भयाकुल मौन है,
झौपड़ी हँस चौंकती, वह जा रहा, साम्य की वंशी बजाता कौन है।''[9]

रामधारी सिंह दिनकर पूँजीवाद को समाप्त कर समतामूलक एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं कि जिसमें न कोई राजा होगी, तथा न कोई प्रजा। जो किसान जिस जमीन को जोतता है, वही उसका मालिक होगा –

''रोटी उसकी जिसका अनाज, जिसकी जमीन जिसका श्रम।''[10]

कवि के अनुसार आदर्श समतामूलक समाज की स्थापना न्याय पर आधारित होनी चाहिए। दिनकर का मानना है कि जब तक सभी को न्यायपूर्ण अधिकार नहीं मिलेगा, तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती है। इस चिरशांति के लिए एक क्रांति का आवश्यक है –

''न्यायोचित अधिकार माँगने से न मिले तो लड़के,
तेजस्वी छीनते समर को जीत या खुद–मरके।''[11]

दिनकर का मानना है कि अनीति पर स्थित शांति की अपेक्षा वे क्रांति को श्रेष्ठतर मानते हैं, जो पूर्ण रूप से अनीति का नाश कर देती है –

''स्वेच्छा से जो न्याय नहीं देता है, उसको
एक रोज आखिर सब कुछ देना पड़ता है।''[12]

दिनकर का मानना है कि यह भूमि किसी की खरीदी हुई दासी नहीं है। इस पर अमीर, गरीब, किसान, मजदूर सभी का अधिकार है। प्रकृति के सारे संसाधन मानव समाज के लिए है और सभी को निडर होकर जीने का अधिकार है –

''धर्मराज, यह भूमि किसी की नहीं है क्रीत दासी,
है जन्मा समान परस्पर, इसके सभी निवासी
है सबको अधिकार मुक्ति का, पोषक रस पीने का,
विविधअभावों से अशंक होकर जीने को।''[13]

कवि का मानना है कि यहाँ कोई दाता नहीं है और कोई भिक्षु नहीं हैं प्रकृति के प्रत्येक कण पर सभी का अधिकार है –

''और कौन है भिक्षु यहाँ पर ओर कौन दाता है,
अपना ही अधिकार मनुज नाना विधि से पाता है।''[14]

इस प्रकार दिनकर क्रांति कर आर्थिक विषमता का नाश करना चाहता है। वह एक ऐसे विश्व का निर्माण करना चाहता है जो स्नेह–सिंचित न्याय पर आधारित हो, जिसमें समता प्राप्ति के पश्चात् सभी मानव सन्तुष्ट हो। कवि का उत्साह इस हद तक बढ़ जाता है कि वह एक पल में ही धरती को स्वर्ग बनाने का इच्छुक है –

''सब हो सकते तुष्ट, एक सा सुख पा सकते हैं,
चाहे तो पल भर में, धरती को स्वर्ग बना सकते हैं।''[15]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में आर्थिक क्रांति की विवेचना करना है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रामधारी सिंह दिनकर क्रांति के अग्रदूत थे। उन्होंने अपने समस्त काव्य में आर्थिक क्रांति का बिगुल बजाया है। उन्होंने मजदूरों, किसानों और दलित दमित जनता के प्रति सहानुभूति रख तथा पूंजीपतियों, जमींदारों तथा उद्योगपतियों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया। उन्होंने समाज में क्रांति के द्वारा आर्थिक विषमता दूर कर एक ऐसे समतामूलक समाज की परिकल्पना की है जिसमें न राजा होगा, न प्रजा, न दाता होगा, न याचक, न मजदूर होगा, न सामंत। सभी को न्यायोचित अधिकार मिलेंगे। सभी का समान रूप से विकास होगा। एक प्रकार से धरती स्वर्ग में बदल जाएगी। चाहे इसके लिए मार्क्सवादी क्रांति का हथियार ही क्यों नहीं उठाना पड़े ...।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हुंकार–हाहाकार, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.23.*
2. *वही, पृ.सं.22.*
3. *वही, पृ.सं.24.*
4. *रेणुका–ताण्डव, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.3.*
5. *हुंकार–हाहाकार, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.23.*
6. *कुरुक्षेत्र, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.136 व 137.*
7. *वही, पृ.128.*
8. *वही, पृ.134.*
9. *हुंकार, भविष्य की आहट, पृ.सं.78.*
10. *नीम के पत्ते, रोटी की स्वाधीनता, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.5.*
11. *कुरुक्षेत्र, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.3.*
12. *परशुराम की प्रतीक्षा, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.35.*
13. *कुरुक्षेत्र, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.126.*
14. *रश्मिरथी, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.52.*
15. *कुरुक्षेत्र, रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.131.*